सभी सर्विस के सम्भचार में बिजी है। शिव जयन्ती भी आती है। बच्चों की दिल होती है रहम दिल बन कर कोई पर रहम करें। तो वो बाप से वर्सा लेवें। अगर रहम दिल नही बनते, सर्विस नही करते, तो वो नाट अपेनी है। फिर उनको भी बन्दरों के साथ मिला देते है। सब सर्विस में ही बिजी है। कोई चित्र बना रहें है कोई क्या कर रहे है। अब देहली में प्रदर्शनी हो रही है दो मास के लिये। वहा चार स्टाल लिये है। खर्चा तो होता है नाँ। बाप भी खुश होते है। ऐसे मौके पर चार क्यों और भी चार ले लेवे तो अच्छा है। अच्छे मौके से करनी चाहिये। ऐसे समय खर्चे से डरना नही है। देहली में तो सबसे जास्ती सर्विस करनी है। बच्चे जितनी सर्विस करते है उतना ही बाप खुश होते है। खर्च का ख्याल नही किया जाता। बच्चों को उमंग रहनी चाहिये कि हम अपने लिये भी और भारत के लिये भी इस सर्विस में लग जावें। भारत में ही स्वराज्य स्थापन करना है नाँ। तो उमंग रहनी चाहिये। प्रदर्शनी में क्या-2 मुफ्त सौगात है? जैसे कि मैड्लस बन रहे है। पर्स आद भी अच्छे है। चित्र तो इनमें है। कोई को सौगात देवें, प्रदर्शनी में बिक भी सकते है। इन चित्रों से भी मनुष्य का जीवन हीरे जैसा बन सकता है। बच्चों में सर्विस का उमंग, शौक नही विचार सागर मंथन नही करते। जैसे कब्र दाखिल हुये पड़े है। बाप के दिल पर नही तो मुर्दों की कतार में हो जाते है। कहा जाता है घर की नदी को कोई पूछता ही नही। बाहर में रहने वाले बच्चों को कितना शौक है। यहाँ भी सीज़न में तो बहुत ही आते है। यहाँ भी प्रदर्शनी हो तो बहुत आकर लाभ प्राप्त करें। खुशी होती है नाँ। ऐसे मत समझों कि बाबा को सर्विस का शौक नही है। यहाँ तो सर्विस है न नही वहा तो बहुत आकर मानेंगे। बाबा को सर्विस का शौक है तब ही तो जाते है नाँ। ऐसे नही कि बाप्दे घूमने याँ मित्र सम्बन्धियों आद को मिलने जाते है। नही बच्चों को रिफ्रैश करने जाते है। बाप समझाते है यह समय ही है सर्विस करने का। किसीको भी जी दान देने का। उसमें से भी माताओं को और कुमारियों को तो बहुत ही खड़ा होना चाहिये। कन्याओं पर तो सबसे ही जास्ती रेस्पान्सीबुलटी है। कन्याओं को तो कोई बन्धन नही है। उनको तो सर्विस के लिये उछलना चाहिये। फैशन आद भी नही करना है। फैशन वाले कपड़े भी पहनते है तो देहअभिमान आ जाता है। फैशन वाली कन्याओं का कब संग भी नही करना चाहिये। हर समय बुधी में यही ख्याल रहे कि दूसरों का कल्याण कैसे करें। शिव की पूजा करते है बाबा खुश होते है? एक तरफ तो उसपर फूल चढ़ाते है पूजा करते है, दूसरी तरफ गाली दे देते है। यह कोई को भी पता नही कि शिव बाबा और ऊंच ते ऊंच वर्सा देते है। तुम्हारे में से भी नम्बरवार समझते है। आधा कल्प से बिछड़े हुये हो। काम चिता पर चढ़-2 सड़ मरे हो। इनको कहा ही जाता है कभी कुत्ते। जो जास्ती कुतरियाँ पिछाड़ी रखते है। कुत्ते और कुतरियाँ कहा जाता है नाँ। इसलिये नाम ही है वैश्यालय। कितना बड़ा नाम है। बेहद का बाप बैठ समझाते है। इस समय को ही कहा जाता है विषय वैतरणी नदी। बाप वैश्यालय से शिवालय बनाते है। बाप आते है तुमको गाड गाडेज़ बनाने। कोई भी अवगुण हो तो उनको निकालना चाहिये। कुत्ते की पूंछ मिसल नही बनना चाहिये। कुत्ते का पूछ कब सीधा ही नही होता। देहअभिमन का भी पूंछ है, क्रोध का भी पूंछ है। यह बड़ी पूंछे है। मोह भी जैसे कि पूंछ है। टूटती ही नही। शिव बाबा से प्रीत रखते ही नही। तमुको तो बहुत लव होना चाहिये। सतयुग में भी तो लव है नाँ आपस में। तुम ब्राहम्णों का तो और ही जास्ती प्यार होना चाहिये। ब्रहमा मुखवंशावली ब्राहम्ण तो देवताओं से भी ऊंच है। एक दो को डराना नही है। कोई आदत नही मिटती है तो समझो कुत्ते का पूंछ है। कितना भी ज्ञान योग की नदी में डालो तो भी क्रोध नही छोड़ते है तो समझा जाता है इनकी तकदीर ही ऐसी है। तुम्हारी ऐम आब्जैक्ट है ही फूल बनना देवताई गुण धारण करना। मुख से पत्थर निकलते है तो पत्थर नाथ पत्थर नाथिनी बन जाते है। रत्न निकलते है जो पारस नाथ नाथिनी कहा जाता है। अपना जाँच करनी चाहिये हम फूल बन खुशबू देते है कहीं कांटे तो नही है। अच्छा ओम